भाकृअनुप-अटारी कानपुर द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों की मध्यावधि समीक्षा कार्यशाला का आयोजन

दि. 12 अक्टूबर 2023 को भाकृअनुप-अटारी, जोन-3 कानपुर, उत्तर प्रदेश के पूर्वी मैदानी कृषि जलवायु क्षेत्र के 17 कृषि विज्ञान केन्द्रों की दो दिवसीय मध्यावधि समीक्षा कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। भाकृअनुप-अटारी कानपुर के निदेशक डा. शान्तनु कुमार दुबे ने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन उ.प्र. के कृषि विज्ञान केन्द्रों की वर्ष 2024 की कार्ययोजना की समीक्षा करने हेतु किया जा रहा है।

उद्घाटन सत्र में निदेशक अटारी डा. शान्तनु कुमार दुबे ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया एवं साथ ही इस कार्यशाला का क्या उद्देश्य है, यह भी संक्षेप में बताया जिसमें कार्य योजना (एक्शन प्लान) प्रमुख फोकस है तथा इस समय तक कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा किये गये कार्यों की समीक्षा भी की जा रही है। निदेशक अटारी कानपुर ने बताया की सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों कृषि के समस्त क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं परंतु किये गये कार्य का उनके द्वारा उचित डाक्यूमेंटेशन होना चाहिए जोकि पालिसी बनने एवं विश्वविद्यालयों द्वारा अनुसंधान के लिये अति-आवश्यक है। प्रत्येक केवीके चयनित गाँवों में समस्या का आधार में रखते हुए तकनीक का चयन एवं प्रदर्शन करें।

डा. एस.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-अटारी, कानपुर ने इस अवसर पर बताया कि प्रत्येक केवीके पर विभिन्न विषयों के विषयवस्तु विशेक्षज्ञों (एसएमएस) का दायित्व है कि कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्षेत्र में किसानों को जो भी समस्यायें आती हैं उनका निराकरण करके किसानों के साथ कार्य करें।

डा. आर.आर. सिंह, निदेशक प्रसार ने आचार्य नरेन्द्र देव कृ.एवं.प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के कृषि विज्ञान केन्द्रों के 'विज़न' की गहन जानकारी दी। उन्होंने सभी से अनुरोध किया कि जो भी तकनीकी किसानों के खेत तक जाये उसमें आने वाली समस्या का निरीक्षण एवं अध्ययन करें जैसे खरपतवार प्रबंधन एवं फर्टीलाइजर प्रबंधन, कीड़ों की समस्या आदि।

डा. एस.एस. सिंह, निदेशक प्रसार, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्याल, झांसी ने कृषि विज्ञान केन्द्रों पर परिचयात्मक टिप्पणी दी। साथ ही उन्होंने सभी केवीके से अनुरोध किया कि धान एवं गेहूँ में जो भी किस्में लगायी जा रही हैं प्रत्येक किस्मों का कितना प्रतिशत है आदि जानकारी का उचित डाक्यूमेंटेशन आवश्यक है। केवीके अगर एफपीओ के साथ मिलकर तकनीकी हस्तांतरण पर कार्य करेंगे तो शत-प्रतिशत सफलता मिलेगी।

डा. ओ.पी. सिंह, पूर्व निदेशक प्रसार, सरदार वल्लभभाई पटेल कृ.एवं.प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा भी इस अवसर पर उद्बोधन दिया गया। साथ ही उन्होंने उपस्थित समस्त वैज्ञानिकों को वैज्ञानिकों की तरह सोचने हेतु प्रेरित किया।

उद्घाटन सत्र के बाद तकनीकी सत्र प्रारम्भ हुआ जिसमें उत्तर प्रदेश के पूर्वी मैदानी कृषि जलावायु क्षेत्र के कृषि विज्ञान केन्द्रों बलिया, मऊ, वाराणसी, अयोध्या, आजमगढ़ द्वितीय़, बाराबंकी, चन्दौली, जौनपुर प्रथम आदि ने कार्ययोजना 2024 का प्रस्तुतिकरण दिया जिसकी विशेषज्ञों ने समीक्षा कर अपनी टिप्पणी एवं सुझाव दिये।

कार्यशाला का संचालन प्रधान वैज्ञानिक डा. राघवेन्द्र सिंह द्वारा किया गया।

(स्रोतः भाकृअनुप-अटारी, कानपुर)

दि. 26–10–2023

भाकृअनुप–अटारी कानपुर द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों की दो दिवसीय मध्यावधि समीक्षा कार्यशाला का आयोजन

दि. 26 अक्टूबर 2023 को भाकृअनुप–अटारी, जोन–3 कानपुर में उत्तर प्रदेश के दक्षिण पश्चिमी अर्द्ध शुष्क क्षेत्र एवं केन्द्रीय मैदानी कृषि जलवायु क्षेत्र के 25 कृषि विज्ञान केन्द्रों की दो दिवसीय मध्यावधि समीक्षा कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिन 12 कृषि विज्ञान केन्द्र (आगरा, मथुरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, अलीगढ़, एटा, महामाया नगर, कासगंज, प्रयागराज प्रथम, फतेहपुर, कौशाम्बी एवं प्रतापगढ़) के अध्यक्षों द्वारा द्वारा अपने कृषि विज्ञान केन्द्र की 2024 की कार्ययोजना का प्रस्तुतीकरण दिया गया।

उद्घाटन सत्र में भाकृअनुप–अटारी कानपुर के प्रधान वैज्ञानिक व पूर्व निदेशक, भाकृअनुप–अटारी, जोधपुर, राजस्थान डा. एस.के. सिंह ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया एवं साथ ही इस कार्यशाला का क्या उद्देश्य है, यह भी संक्षेप में बताया जिसमें कार्य योजना (एक्शन प्लान) प्रमुख फोकस है तथा इस समय तक कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा किये गये कार्यों की समीक्षा भी की जा रही है। किसानों की समस्याओं को देखते हुए सभी केवीके का और आनफार्म ट्रायल विकसित करने और कार्यान्वित करने की विशेष आवश्यकता है। प्रत्येक केवीके चयनित गाँवों में समस्या का आधार में रखते हुए तकनीकों का चयन एवं प्रदर्शन करें।

डा. राघवेन्द्र सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–अटारी, कानपुर ने इस अवसर पर बताया कि परिचयात्मक टिप्पणी दी। साथ ही उन्होंने सभी केवीके से अनुरोध किया कि धान एवं गेहूँ में जो भी प्रजातियाँ लगायी जा रही हैं, उनमें प्रत्येक प्रजातियों का कितना प्रतिशत है आदि की जानकारी का उचित डाक्यूमेंटेशन आवश्यक है। कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्षेत्र में किसानों को जो भी समस्यायें आती हैं उनका निराकरण करके किसानों के साथ कार्य करें।

डा. आर.के. यादव, निदेशक प्रसार, च.शे.आ. कृ. एवं प्रौ. विवि. कानपुर ने कृषि विज्ञान केन्द्रों के विजन की जानकारी दी साथ ही पानी प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन, फर्टीलाइजर प्रबंधन, कीटों की समस्या आदि का प्रबंधन कर केवीके को कार्य करने का आग्रह किया।

डा. ओ.पी. सिंह, पूर्व निदेशक प्रसार, सरदार वल्लभभाई पटेल कृ.एवं.प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा भी इस अवसर पर उद्बोधन दिया गया। साथ ही उन्होंने उपस्थित समस्त वैज्ञानिकों को वैज्ञानिकों की तरह सोचने एवं एक साथ मिलकर कार्य करने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों को साथ लेकर एवं किसानों के द्वारा बतायी गयी समस्याओं को ध्यान में रख कर कार्य करने का आग्रह किया जिससे किसानों एवं देश की उन्नति हो सके।

उद्घाटन सत्र के बाद तकनीकी सत्र प्रारम्भ हुआ जिसमें प्रथम दिन 12 कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कार्ययोजना 2024 का प्रस्तुतिकरण दिया जिसकी विशेषज्ञों ने समीक्षा कर अपनी टिप्पणी एवं सुझाव दिये। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आडिट यूटिलाइजेशन सार्टिफिकेट, बजट, व्यय, पीएफएमएस, एग्रीड्रोन, प्रत्येक परियोजना के लिये बैंक खाता खुलना एवं वित्तीय स्थिति, निकरा, फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के अन्तर्गत रबी के प्रदर्शन लगाने, नारी परियोजना, प्राकृतिक खेती परियोजना आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई।

कार्यशाला का के अंत में डा. सीमा यादव, वैज्ञानिक, अटारी कानपुर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

(स्रोतः भाकृअनुप–अटारी, कानपुर)

दि. 02–11–2023

भाकृअनुप–अटारी कानपुर द्वारा उत्तर प्रदेश के भाबर एवं तराई, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी कृषि जलवायु क्षेत्र के कृषि विज्ञान केन्द्रों की दो दिवसीय मध्यावधि समीक्षा कार्यशाला का उद्घाटन

दि. 02 नवम्बर 2023 को भाकृअनुप–अटारी, जोन–3 कानपुर, उत्तर प्रदेश के भाबर एवं तराई, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी कृषि जलवायु क्षेत्र के 24 कृषि विज्ञान केन्द्रों की दो दिवसीय मध्यावधि समीक्षा कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। भाकृअनुप–अटारी कानपुर के निदेशक डा. शान्तनु कुमार दुबे ने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन उ.प्र. के कृषि विज्ञान केन्द्रों की वर्ष 2024 की कार्ययोजना तैयार करने हेतु किया जा रहा है।

कार्यशाला के प्रथम दिन उद्घाटन सत्र में कार्यशाला का शुभारंभ द्वीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। निदेशक अटारी डा. शान्तनु कुमार दुबे ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया एवं साथ ही इस कार्यशाला का एवं केवीके के उद्देश्य के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि मध्यावधि कार्यशाला का मुख्य उद्देश वर्ष 2024 के लिये कृषि विज्ञान केन्द्रों की कार्य योजना (एक्शन प्लान) तैयार करना है। कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा विगत वर्ष (2023) में किये गये कार्यों की समीक्षा भी की जा रही है। निदेशक अटारी कानपुर ने बताया की सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों कृषि के समस्त क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं और उनके द्वारा किये गये कार्य का उचित डाक्यूमेंटेशन होना भी अति–आवश्यक है। डा. दुबे ने केवीके से कहा कि प्रक्षेत्र परीक्षण (आन फार्म ट्रायल) की योजना बनाने से पूर्व पीआरए तकनीकों एवं विधियों का उपयोग करते हुए गाँव का सर्वेक्षण आवश्यक है। केवीके के वैज्ञानिक एक टीम के रूप में सामंजस्य के साथ कार्य करें और गाँव भ्रमण कर किसानों से समूह चर्चा करके उनकी समस्यायें सुनें तथा उनकी जरूरतों के अनुसार कार्य नियोजन करें। उन्होंने यह भी बताया कि देश और प्रदेश में छोटे और सीमांत किसानों की संख्या अधिक है अतः इस बात को दृष्टिगत रखते हुए प्रक्षेत्र परीक्षण प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण की योजना बनायें।

डा. ओ.पी. सिंह, पूर्व निदेशक प्रसार, सरदार वल्लभभाई पटेल कृ.एवं.प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा भी इस अवसर पर उद्बोधन दिया गया। उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्रों के अध्यक्षों तथा विषय वस्तु विशेषज्ञों से मिल कर कार्य कर नई–नई तकनीकियों को किसानों तक पहुँचाने का आवाहन किया।

डा. पी.के. सिंह, निदेशक प्रसार, सरदार वल्लभभाई पटेल कृ.एवं.प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ ने बताया कि एसवीपीयूएटी मेरठ के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा अपने कार्यक्षेत्र के गाँवों का भ्रमण किया जा रहा है और किसानों की समस्याएं सुन कर कार्ययोजना बनाने के साथ–साथ उनका समाधान भी कर रहे हैं।

डा. राघवेन्द्र सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–अटारी, कानपुर ने भी अपने उद्बोधन में केवीके के वैज्ञानिकों से अनुरोध किया कि जो भी तकनीक किसानों तक जाए उसमें आने वाली समस्याओं

जैसे खरपतवार प्रबंधन, पानी प्रबंधन, उर्वरक प्रबंधन आदि का अध्ययन करें और उनके समाधान हेतु कार्य–नियोजन करें।

डा. सीमा यादव, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–अटारी कानपुर ने अपने उद्‌बोधन में किसानों के पशुओं की बीमारियों, पोषक आहार, प्रक्षेत्र परीक्षण डिजाइन करने आदि पर अपने विचार कृषि विज्ञान केन्द्रों के साथ साझा किये जिससे किसानों द्वारा पाले जा रहे जानवरों के स्वास्थ्य में सुधार और दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हो सके।

उद्‌घाटन सत्र के बाद तकनीकी सत्र प्रारम्भ हुआ जिसमें उत्तर प्रदेश के भाबर एवं तराई, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी कृषि जलवायु क्षेत्र के 13 कृषि विज्ञान केन्द्रों ने कार्ययोजना 2024 का प्रस्तुतिकरण दिया जिसकी विशेषज्ञों ने समीक्षा कर अपनी टिप्पणी एवं सुझाव दिये।

कार्यक्रम के अंत में डा. सीमा यादव, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–अटारी कानपुर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

(स्रोतः भाकृअनुप–अटारी, कानपुर)